Import & Export Course
आयात और निर्यात कोर्स

Fathoms well the significance of Import & Export in the development of the nation.

राष्ट्र के विकास में आयात और निर्यात का महत्व अच्छी तरह से है।

Prepared by:
HELPFUL FOUNDATION
F-17 First Floor, Krishna Apra Plaza
Commercial Belt Alpha 1, Greater Noida – 201306, U.P - INDIA

Ph: +91 8929186851 Email – course@helful.foundation

Website: www.helpful.foundation

ABOUT US / हमारे बारे में

HELPFUL FOUNDATION is staunchly working with the goal to save the country's Integration and its Economic Security and National Security.

देश की एकता और उसकी आर्थिक सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा को बचाने के लक्ष्य के साथ मजबूती से काम कर रहा है।

Helpful Foundation (HF) is an independent organisation and India's First Trust who is working on National Security and Anti - Economic Offences. We are working in National and International and established on 21st April 2017.

हेल्पफुल फाउंडेशन (एचएफ) एक स्वतंत्र संगठन और भारत का पहला ट्रस्ट है जो राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विरोधी अपराधों पर काम कर रहा है। हम नेशनल और इंटरनेशनल में काम कर रहे हैं और 21 अप्रैल 2017 को स्थापित किया गया है।

The reason for starting the course. / कोर्स शुरू करने का कारण।

Export-Import course is an initiative of Helpful Foundation for mentoring first generation entrepreneurs in the field of international trade by reaching out to them through training programs, counselling sessions and facilitation.

निर्यात-आयात पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रमों, परामर्श सत्रों और सुविधा के माध्यम से उन तक पहुंच बनाकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में पहली पीढ़ी के उद्यमियों का उल्लेख करने के लिए हेल्पफुल फाउंडेशन की एक पहल है।

Fathoms well the significance of Import & Export in the development of the nation and therefore, has to offer export consultancy services to Indian importers as well as exporters.

राष्ट्र के विकास में आयात और निर्यात के महत्व को अच्छी तरह से समझा जाता है और इसलिए, भारतीय आयातकों के साथ-साथ निर्यातकों को भी निर्यात परामर्श सेवाएँ प्रदान करनी होती हैं।

Helpful Foundation starts the course because India ranks second worldwide in farm outputs. As per 2018, Agriculture employed 50% of the Indian workforce and contributed 17-18% to the country's GDP

हेल्पफुल फाउंडेशन कोर्स शुरू करता है क्योंकि भारत दुनिया भर में फार्म आउटपुट में दूसरे स्थान पर है। 2018 के अनुसार, कृषि ने 50% भारतीय कार्यबल को रोजगार दिया और देश की जीडीपी में 17-18% का योगदान दिया

Most farmers from eastern and southern states of India rate the condition of farmers more negatively than their counterparts in other regions. Western and Central India farmers are least unhappy with the farmers' condition.

भारत के पूर्वी और दक्षिणी राज्यों के अधिकांश किसान अन्य क्षेत्रों में अपने समकक्षों की तुलना में किसानों की स्थिति को अधिक नकारात्मक रूप से दर्शाते हैं। पश्चिमी और मध्य भारत के किसान किसानों की स्थिति से कम से कम नाखुश हैं।

Who can attend?
- Entrepreneurs
- Exporters / Importers
- Employees of export house/status holders
- Anyone with interest in Export-Import.

कौन भाग ले सकता है?
- उद्यमी
- निर्यातकों / आयातकों
- निर्यात घर / स्थिति धारकों के कर्मचारी
- निर्यात-आयात में रुचि रखने वाला कोई भी।

What is the benefit?
- Know the basics of export-import Business
- Stepping to become an exporter in 05 days

क्या फायदा है?
- निर्यात-आयात व्यापार की मूल बातें जानें
- 05 दिनों में एक निर्यातक बनने के लिए कदम

Registration Opened on : 12th June 2019

पंजीकरण 12 जून 2019 को खोला गया ।

Program Fee : Total Fee Rs. 1,350/-

Duration of program : Five days.
- 60 participants per batch

कार्यक्रम की अवधि: पांच दिन।• प्रति बैच 60 प्रतिभागी

Course Fee : Total Fee Rs. 1,350/-

The Course fee payable by DD/ NEFT/ RTGS/ Cash in the name of HELPFUL FOUNDATION.

Bank Name : IndusInd Bank Limited
Account Name : HELPFUL FOUNDATION
Account Number : 257021122016
IFSC: – INDB0000546
Branch: – Commercial Belt Alpha – 1, Greater Noida -201306

You are welcome to avail of training modules.

प्रशिक्षण मॉड्यूल का लाभ उठाने के लिए आपका स्वागत है।

Session 1 Introduction to Export/Import, Assessing export readiness of your firm

Coverage

- What is meant by exports?
- Legal definition
- Why to export?
- Who can export?
- How to assess your export readiness (questionnaire…)

Session 2: Basic steps for Exporting

Coverage

- Guidelines for the prospective entrepreneur.
- Preparing the export plan.
- Applying for IEC Code – Online or Offline
- Understanding the purpose and procedure of various Incoterms for an international trade transaction and for decreasing the responsibilities and obligations of the exporter.
- Choosing the right shipping term keeping in mind the mode of payment affecting the responsibilities and obligations of the exporter.
- Understanding the requirements of the state government.

सत्र 1 निर्यात / आयात का परिचय, अपनी फर्म की निर्यात तत्परता का आकलन करना

कवरेज

- निर्यात से क्या अभिप्राय है?
- कानूनी परिभाषा
- निर्यात क्यों ?
- कौन निर्यात कर सकता है?
- अपनी निर्यात तत्परता (प्रश्नावली ...) का आकलन कैसे करें

सत्र 2: निर्यात के लिए बुनियादी कदम

कवरेज

- भावी उद्यमी के लिए दिशानिर्देश।
- निर्यात योजना तैयार करना।
- आईईसी कोड के लिए आवेदन करना - ऑनलाइन या ऑफलाइन
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लेनदेन के लिए और निर्यातक की जिम्मेदारियों और दायित्वों को कम करने के लिए विभिन्न Incoterms के उद्देश्य और प्रक्रिया को समझना।
- निर्यातक की जिम्मेदारियों और दायित्वों को प्रभावित करने वाले भुगतान के तरीके को ध्यान में रखते हुए सही शिपिंग शब्द चुनना।
- राज्य सरकार की आवश्यकताओं को समझना।

Session 3: How to Access Markets

Coverage
• Using trade data to identify the products with export potential
• Adapting your product to meet government regulations, country conditions, or preferences
• Modifying your product labeling and packaging
• Planning for installation of your product overseas

Session 4 : Sources of International market data (Online & Offline)

Coverage
• Step by step process flow and business decision indicators
• Sources of trade data collation followed by hands on experience of downloading the trade data
• Analyzing the data to apply it in real life business through mock case situations

Session 5 : Foreign Trade Policy (2015:2020): Major highlights

Coverage
1. Foreign Trade Policy (2015-2020) – Major highlights
2. DGFT and export promotion --- Role of RA, EPCs and RCMC
3. Interface with Airports, Ports, ICDs, SEZs, ICE GATE

सत्र 3: बाजार तक कैसे पहुंचें

कवरेज
• निर्यात क्षमता वाले उत्पादों की पहचान करने के लिए व्यापार डेटा का उपयोग करना
• सरकारी नियमों, देश की स्थितियों, या प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए अपने उत्पाद को अपनाना
• अपने उत्पाद लेबलिंग और पैकेजिंग को संशोधित करना
• विदेशों में अपने उत्पाद की स्थापना के लिए योजना बनाना

सत्र 4: अंतर्राष्ट्रीय बाजार डेटा के स्रोत (ऑनलाइन और ऑफलाइन)

कवरेज
• कदम प्रक्रिया प्रवाह और व्यापार निर्णय संकेतक द्वारा कदम
• व्यापार डेटा डाउनलोड करने के अनुभव के बाद हाथों से व्यापार डेटा टकराव के स्रोत
• नकली मामला स्थितियों के माध्यम से वास्तविक जीवन के व्यवसाय में इसे लागू करने के लिए डेटा का विश्लेषण

सत्र 5: विदेश व्यापार नीति (2015: 2020): प्रमुख आकर्षण

कवरेज
1. विदेश व्यापार नीति (2015-2020) - प्रमुख आकर्षण
2. डीजीएफटी और निर्यात संवर्धन --- आरए, ईपीसी और आरसीएमसी
3. की भूमिका। एयरपोर्ट्स, पोर्ट्स, ICDs, SEZs, ICE गेट के साथ इंटरफेस

Session 6 : Introduction to ITC(HS) Codes. How to get IEC Code

Coverage
- What is an IEC?
- How to get an IEC online?
- How to make changes in IEC?

सत्र 6: आईटीसी (एचएस) कोड का परिचय। आईईसी कोड कैसे प्राप्त करें

कवरेज
- एक आईईसी क्या है?
- IEC ऑनलाइन कैसे प्राप्त करें?
- आईईसी में परिवर्तन कैसे करें?

Session 7 : Export Documentation

Coverage
- Understanding the role of trade documentation & procedure in international trade transactions.
- Knowing what are the documentation practices & procedure in India for making export/import from the country.
- Understanding the commercial and regulatory documentation practices in order to avoid any kind of non-compliance in \ international documents which may result in penalty or loss of incentives or benefits such as duty drawback.

सत्र 7: निर्यात प्रलेखन

कवरेज
- व्यापार प्रलेखन और प्रक्रिया की भूमिका को समझना अंतरराष्ट्रीय व्यापार लेनदेन।
- भारत में प्रलेखन प्रथाओं और प्रक्रिया क्या हैं, यह जानना देश से निर्यात / आयात करने के लिए।
- वाणिज्यिक और नियामक प्रलेखन को समझना किसी भी प्रकार के गैर-अनुपालन से बचने के लिए अभ्यास अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज जिसके परिणामस्वरूप जुर्माना या हानि हो सकती है प्रोत्साहन या लाभ जैसे कि ड्यूटी ड्राबैक।

Session 08: Customs and Excise interface

Coverage

- Excise & Customs Interface.
- Online filing of custom documents.
- Ease for doing exports.
- Factory Stuffing / Excise Sealing / Self Sealing Permission for container stuffing.
- Various Checkpoints to avoid hassles.

Session 09 : Letter of Credit and implication of UCP: 600 rules

Coverage

- Management of international payments to ensure full and on-time payments
- Letter of Credit
- Implication of UCP-600 rules.

Session 10 : Risk Management

Coverage

- What is Risk? Various types of Risks in trade- specially International trade
- Risk Management viz. Identification , quantification, analysis, & transfer of risk
- What is credit & sovereignty risk
- Role of ECGC & Credit risk agencies in the promotion of Export Trade
- Procedures & settlement of claims

सत्र 08: सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क इंटरफ़ेस

कवरेज

- एक्साइज एंड कस्टम्स इंटरफ़ेस।
- कस्टम दस्तावेजों की ऑनलाइन फाइलिंग।
- निर्यात करने में आसानी।
- फैक्टरी स्टफिंग / एक्साइज सीलिंग / सेल्फ सील की अनुमति कंटेनर भराई।
- बाधाओं से बचने के लिए विभिन्न चेकपॉइंट्स।

सत्र 09: क्रेडिट का पत्र और UCP का निहितार्थ: 600 नियम

कवरेज

- पूर्ण और समय पर सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय भुगतान का प्रबंधन भुगतान
- साख पत्र
- UCP-600 नियमों का कार्यान्वयन

सत्र 10: जोखिम प्रबंधन

कवरेज

- जोखिम क्या है? व्यापार में विभिन्न प्रकार के जोखिम- विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
- जोखिम प्रबंधन अर्थात। जोखिम की पहचान, परिमाणीकरण, विश्लेषण और हस्तांतरण
- क्रेडिट और संप्रभुता जोखिम क्या है निर्यात व्यापार को बढ़ावा देने में ईसीजीसी और क्रेडिट जोखिम एजेंसियों की भूमिका
- दावों की प्रक्रिया और निपटान

Session 11: Preparation & Execution of Export Business Plan

Coverage
• How to write export business plan
• Contents of this plan
• Role of DGFT and RAs in export facilitation • Financial & Product considerations
• Market identification
• Challenges and opportunities in selected markets
• Negotiating skill for marketing
• Economic diplomacy and role of Embassies

सत्र 11: निर्यात व्यापार योजना की तैयारी और निष्पादन

कवरेज
• एक्सपोर्ट बिज़नेस प्लान कैसे लिखें
• इस योजना की सामग्रीनिर्यात सुविधा में DGFT और RAs की भूमिका
• वित्तीय और उत्पाद विचार• बाजार की पहचान
• चयनित बाजारों में चुनौतियां और अवसर
• विपणन के लिए बातचीत कौशल
• आर्थिक कूटनीति और दूतावासों की भूमिका

How many are interested to work in agriculture throughout India?

The grim picture is the total numbers of farmers because we always see in percentage. During 1951 the total numbers of cultivators & workers including was 97.2 million (32.55 of total rural population & 26.92 of the total population) million but during 2011 it was 263 million (31.55 of total rural population & 21.71 of the total population).
If we can assume the same level of percentage as 2011 for 2015 then total agricultural workers (farmers & Laboure's) population will be around 273 million.
Now come to the 2nd point
Around 79% of farmers are small & medium where 14% is a landless farmer.

गंभीर तस्वीर किसानों की कुल संख्या है क्योंकि हम हमेशा प्रतिशत में देखते हैं। 1951 के दौरान किसानों और श्रमिकों की कुल संख्या 97.2 मिलियन (कुल ग्रामीण आबादी का 32.55 और कुल आबादी का 26.92) मिलियन थी , लेकिन 2011 के दौरान यह 263 मिलियन (कुल ग्रामीण आबादी का 31.55 और कुल आबादी का 21.71) था । यदि हम 2015 के लिए 2011 के समान प्रतिशत मान सकते हैं तो कुल कृषि श्रमिकों (किसानों और मजदूरों) की आबादी लगभग 273 मिलियन होगी।
अब 2nd पॉइंट पर आते हैं
लगभग 79% किसान छोटे और मध्यम हैं जहाँ 14% भूमिहीन किसान हैं।

Farmers by land ownership (In %) भूमि स्वामित्व के अनुसार (% में)

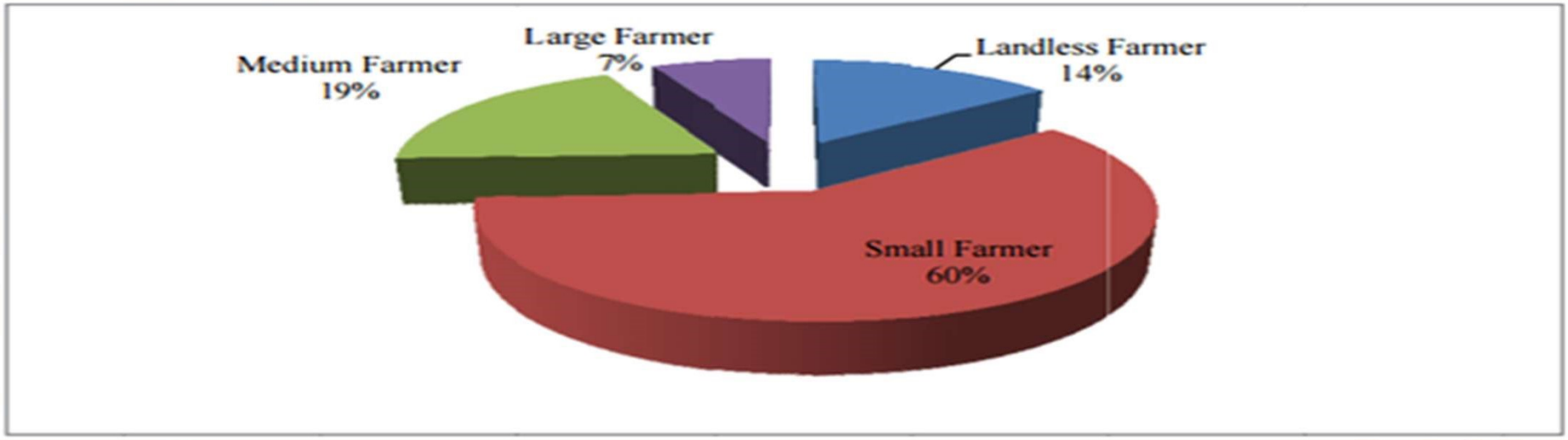

A recent survey by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi, and released by NGO Lokniti, “State of Indian Farmers: A Report”, conducted in 274 villages spread over 137 district of 18 Indian states, has found that a big proportion of Indian farmers are dissatisfied with their condition and would like to shift to cities, if opportunities arise.

सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (CSDS), दिल्ली द्वारा हाल ही में और NGO लोकनीति द्वारा जारी एक सर्वेक्षण, "भारतीय किसानों का राज्य: एक रिपोर्ट", जो 18 भारतीय राज्यों के 137 जिले में फैले 274 गाँवों में किया गया है, ने पाया है कि यदि अवसर पैदा होते हैं, तो भारतीय किसानों का एक बड़ा हिस्सा उनकी स्थिति से असंतुष्ट है और शहरों में जाना चाहेगा।

In that survey, most of the farmers think that city life is better than villages (In %)

उस सर्वेक्षण में, अधिकांश किसानों को लगता है कि गाँवों की तुलना में शहर का जीवन बेहतर है (% में)

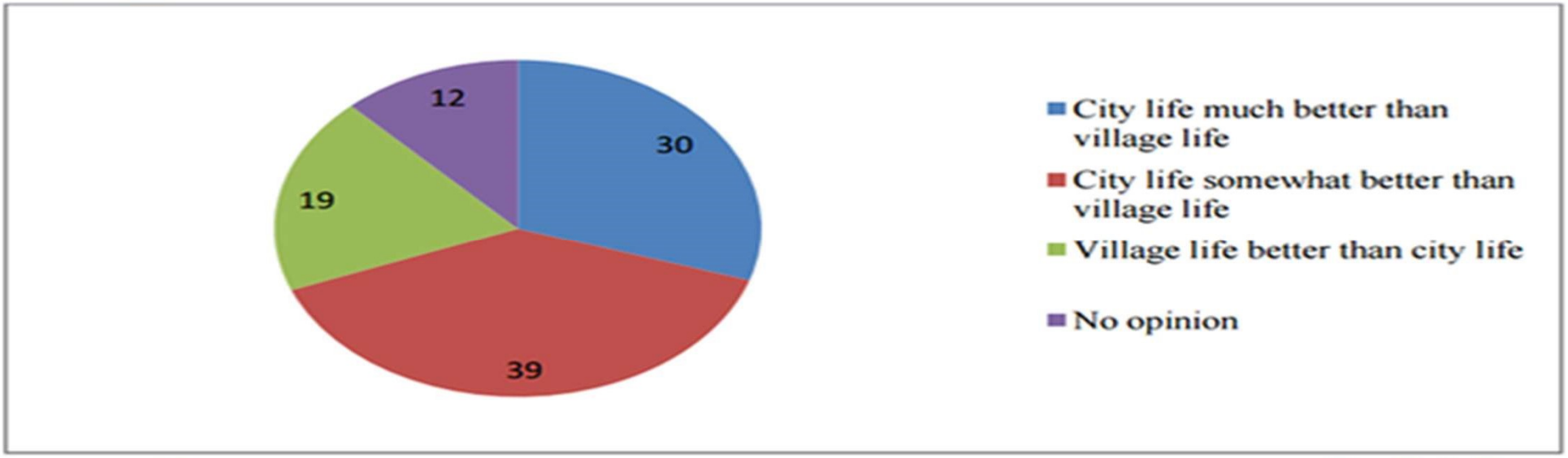

65 per cent of farmers said that other members from the family also helped in activities related to farming.

65 फीसदी किसानों ने कहा कि परिवार के अन्य सदस्यों ने भी खेती से जुड़ी गतिविधियों में मदद की।

Around 62% of farmers are ready to quit farming if they get a good job (In %)

लगभग 62% किसान अच्छी नौकरी पाने पर खेती छोड़ने के लिए तैयार हैं (% में)

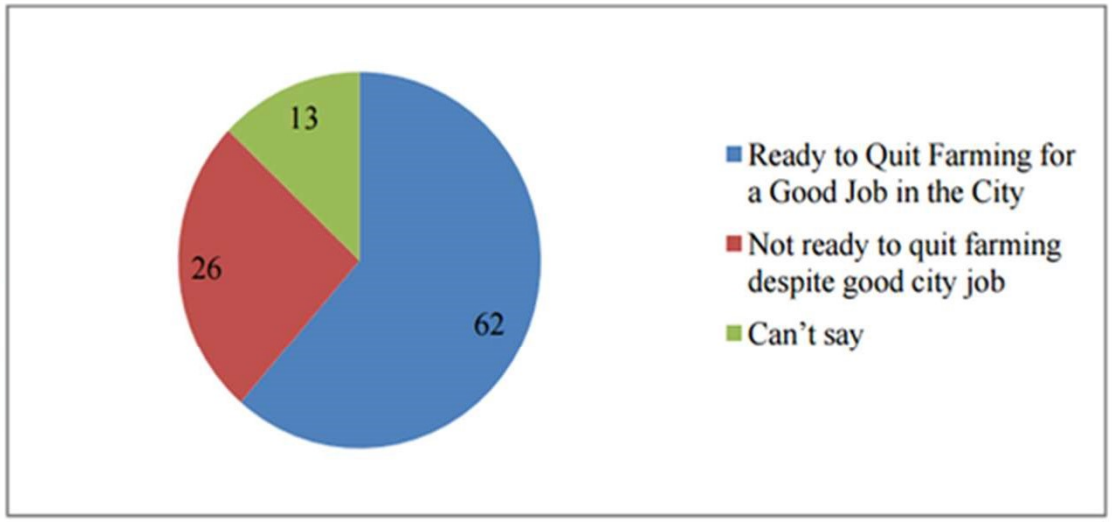

The survey found that nearly three-fourths (72%) of farmers like their profession & around 22% of farmers said they do not like doing farming.

Among those who said they like farming, 60% like it as it is their ancestral occupation, 15% feel a sense of pride in being a farmer, while 10% said that they like farming as it gives them a good income. Another 10% said they just simply enjoy doing farming.

What are the reasons for the 22% who dislike farming? 36% of farmers said lack of a good income is the main reason for their dislike of farming. 18% of those who dislike farming said they are doing it only because of family pressure. 16% say that they see no future in this sector. 9% said that they wish to do another job, while 7% consider farming stressful or risky and hence do not like doing it.

सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग तीन-चौथाई (72%) किसान अपने पेशे को पसंद करते हैं और लगभग 22% किसानों ने कहा कि उन्हें खेती करना पसंद नहीं है। जिन लोगों ने कहा कि वे खेती करना पसंद करते हैं, उनमें से 60% इसे पसंद करते हैं क्योंकि यह उनका पैतृक व्यवसाय है, 15% किसान होने में गर्व की भावना महसूस करते हैं, जबकि 10% ने कहा कि वे खेती करना पसंद करते हैं क्योंकि यह उन्हें अच्छी आय देता है। एक और 10% ने कहा कि वे केवल खेती करने का आनंद लेते हैं । खेती को नापसंद करने वाले 22% के क्या कारण हैं? 36% किसानों ने कहा कि अच्छी आय की कमी उनकी खेती के प्रति अरुचि का मुख्य कारण है। खेती को नापसंद करने वाले 18% लोगों ने कहा कि वे ऐसा केवल परिवार के दबाव के कारण कर रहे हैं। 16% का कहना है कि वे इस क्षेत्र में कोई भविष्य नहीं देखते हैं। 9% ने कहा कि वे एक और काम करना चाहते हैं, जबकि 7% खेती को तनावपूर्ण या जोखिम भरा मानते हैं और इसलिए इसे करना पसंद नहीं करते हैं।

Farmer Interest in farming (in %) खेती में किसान की दिलचस्पी (% में)

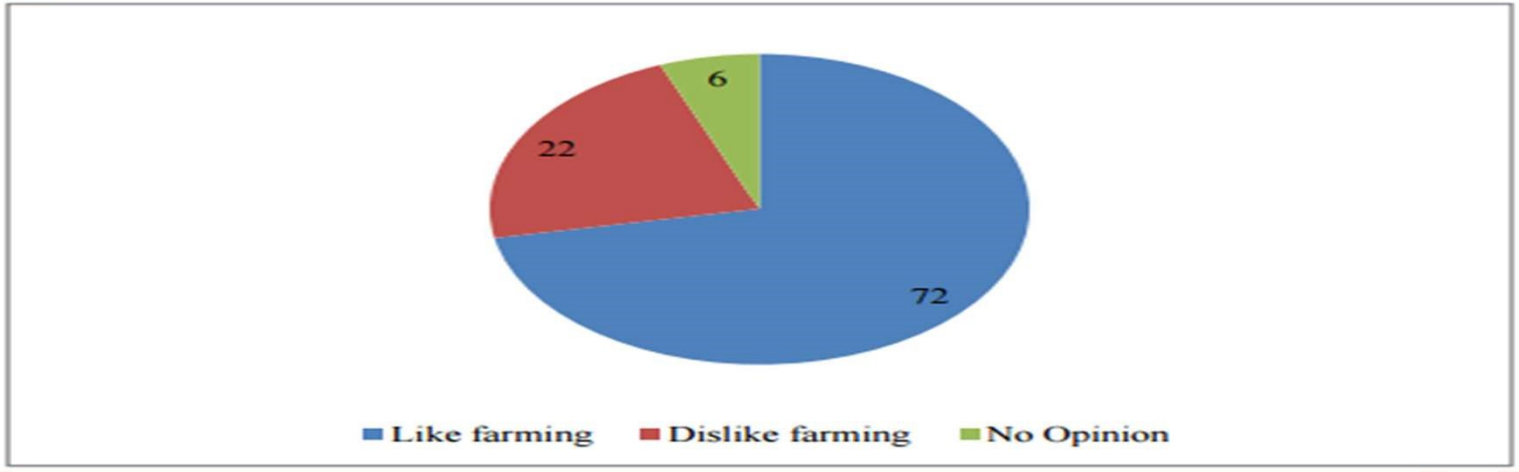

Most farmers from eastern and southern states of India rate the condition of farmers more negatively than their counterparts in other regions. Western and Central India farmers are least unhappy with the farmers' condition.

भारत के पूर्वी और दक्षिणी राज्यों के अधिकांश किसान अन्य क्षेत्रों में अपने समकक्षों की तुलना में किसानों की स्थिति को अधिक नकारात्मक रूप से दर्शाते हैं। पश्चिमी और मध्य भारत के किसान किसानों की स्थिति से कम से कम नाखुश हैं।

Reason for liking farming (in %)

खेती पसंद करने का कारण (% में)

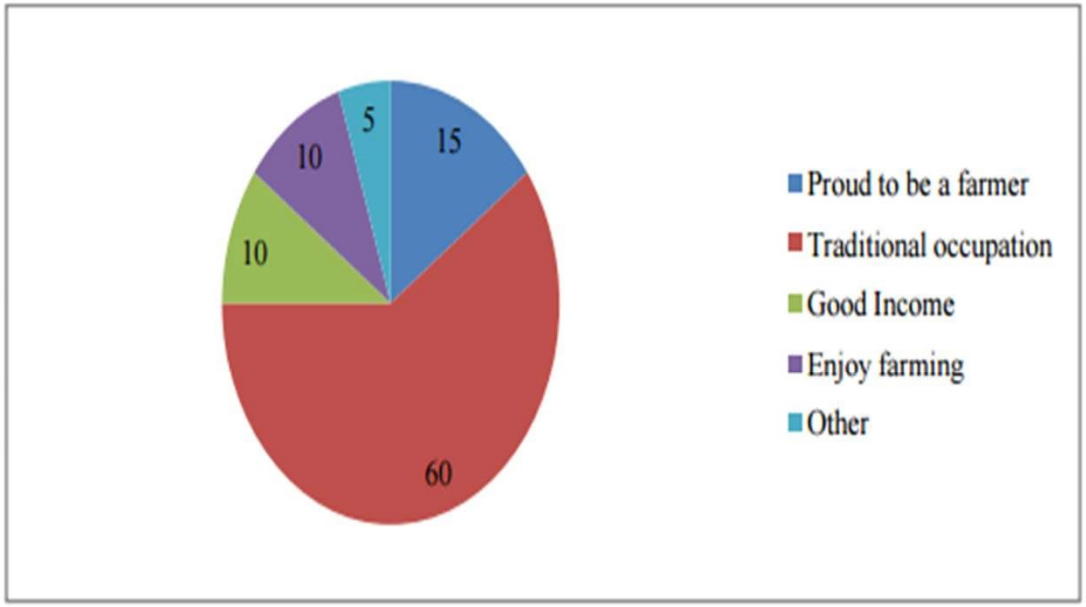

Overall Condition of Farmers is perceived to be bad in Most States (in %)

अधिकांश राज्यों में किसानों की कुल हालत खराब है (% में)

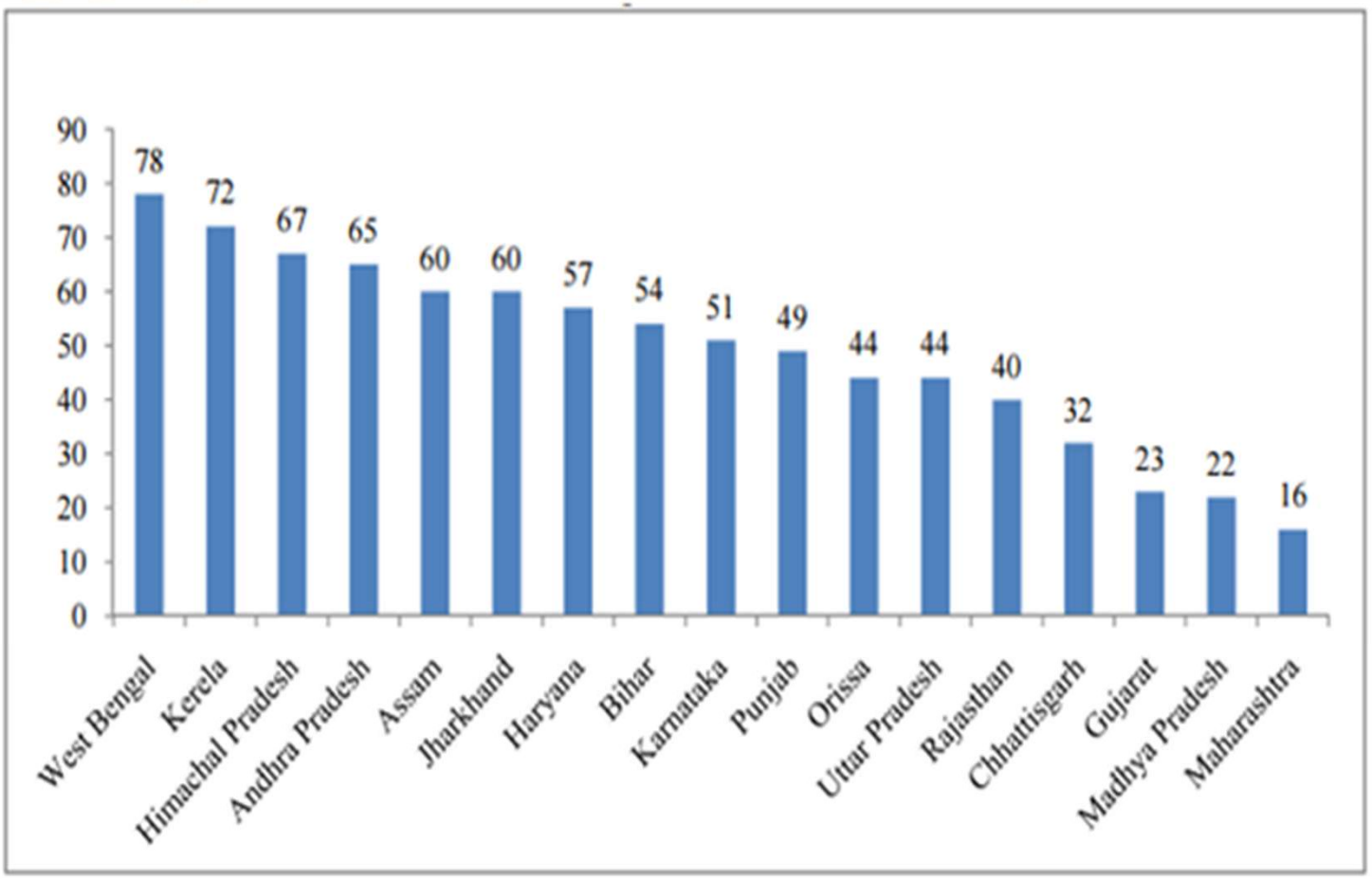

Thank You